



CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.445



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

विद्यालय वातावरण में सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों की भूमिका

राकेश रंजन

सहायक प्राध्यापक

श्री नित्यानंद झा स्कूल ऑफ एजुकेशन
संदीप विश्वविद्यालय, सिजोल, मधुबनी।

Email-rakeshranjan1993mug@gmail.com, Mobile-9304495667

.....
First draft received: 15.07.2025, Reviewed: 20.07.2025
Final proof received: 21.07.2025, Accepted: 27.07.2025

सारांश

विद्यालय केवल पुस्तक-ज्ञान प्रदान करने की संस्था नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, चरित्र, मूल्य और कौशल के समग्र विकास का केंद्र है। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ विद्यालय वातावरण को जीवंत, सक्रिय और रचनात्मक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। खेल-कूद, वाद-विवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विज्ञान प्रदर्शनी, योग, समाजसेवा आदि गतिविधियाँ न केवल विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक समरसता विकसित करती हैं, बल्कि शिक्षा को रोचक एवं जीवनोपयोगी भी बनाती हैं। प्रस्तुत लेख में सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों की परिभाषा, घटक, विद्यालय वातावरण पर इनके प्रभाव, समायोजन, परिणाम और आधुनिक शिक्षा में इनकी प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : विद्यालय वातावरण, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, व्यक्तित्व विकास, सामाजिक समरसता, शैक्षिक गुणवत्ता, अनुशासन, रचनात्मकता, मूल्य शिक्षा आदि।

परिचय

शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। आज का युग प्रतिस्पर्धा और तकनीक का है जहाँ विद्यार्थियों से केवल बौद्धिक क्षमता की अपेक्षा नहीं की जाती, बल्कि शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक गुणों का भी विकास आवश्यक है। विद्यालय वातावरण को यदि समृद्ध और प्रगतिशील बनाना है, तो उसमें सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को उचित स्थान देना अनिवार्य है। यह गतिविधियाँ विद्यार्थियों के लिए प्रयोगात्मक शिक्षा, रचनात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक अनुभव का माध्यम बनती हैं।

परिभाषा

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों की परिभाषा –

“ये सभी गतिविधियाँ जो औपचारिक पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु कराई जाती हैं, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ कहलाती हैं।”

उदाहरण –

- खेल-कूद
- नृत्य, संगीत और नाटक
- भाषण, वाद-विवाद, निबंध लेखन
- विज्ञान और कला प्रदर्शनी
- योग और ध्यान
- समाजसेवा, पर्यावरण संरक्षण अभियान

इन गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों को पुस्तक-ज्ञान से परे वास्तविक जीवन से जोड़ना और उनमें आत्मविश्वास, सहयोग तथा नेतृत्व क्षमता का विकास करना है।

घटक (Components of Co-curricular Activities)

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं –

1. **शारीरिक गतिविधियाँ** – खेल, व्यायाम, योग, खेल-कूद प्रतियोगिता।
2. **सांस्कृतिक गतिविधियाँ** – नृत्य, संगीत, नाटक, कविता-पाठ, चित्रकला।
3. **साहित्यिक गतिविधियाँ** – भाषण, वाद-विवाद, लेखन प्रतियोगिता।
4. **वैज्ञानिक गतिविधियाँ** – विज्ञान मेले, मॉडल प्रदर्शनी, प्रोजेक्ट निर्माण।
5. **सामाजिक गतिविधियाँ** – स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, समाजसेवा कार्य।
6. **नैतिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ** – प्रार्थना सभा, योग, नैतिक कहानियाँ।
7. **नेतृत्व विकास गतिविधियाँ** – छात्र परिषद, हाउस प्रणाली, टीम लीडरशिप।

प्रभाव एवं समायोजन (Influence and Adjustment)

विद्यालय वातावरण में सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ कई प्रकार से प्रभाव डालती हैं:

1. **व्यक्तिगत समायोजन** – विद्यार्थी आत्मविश्वास, आत्म-अभिव्यक्ति और आत्म-नियंत्रण सीखते हैं।
2. **सामाजिक समायोजन** – टीम वर्क, सहयोग और सहानुभूति का विकास होता है।
3. **शैक्षिक समायोजन** – पढ़ाई के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है।
4. **भावनात्मक समायोजन** – तनाव, दबाव और असुरक्षा की भावना कम होती है।
5. **अनुशासन का समायोजन** – प्रतियोगिताएँ और समूह कार्य अनुशासनप्रियता विकसित करते हैं।

प्रभाव (Impact on School Environment)

1. **सकारात्मक वातावरण का निर्माण** – विद्यालय केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं रहता, बल्कि एक जीवंत और आकर्षक स्थान बन जाता है।

2. **शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों में सुधार** – गतिविधियों में सहभागिता से आपसी विश्वास और संवाद बढ़ता है।
3. **विद्यार्थियों में उत्साह और प्रेरणा** – बच्चे सक्रिय भागीदारी से अधिक ऊर्जावान और आत्मनिर्भर बनते हैं।
4. **शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार** – पढ़ाई अधिक प्रयोगात्मक और रोचक हो जाती है।
5. **विद्यालय की प्रतिष्ठा में वृद्धि** – उत्कृष्ट प्रदर्शन विद्यालय की पहचान बनाता है।

परिणाम (Consequences)

सकारात्मक परिणाम:

- सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास
- आत्म-अभिव्यक्ति एवं आत्मविश्वास
- शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य
- सांस्कृतिक चेतना और मूल्यबोध
- नेतृत्व क्षमता और सामाजिक समरसता

नकारात्मक परिणाम (यदि उचित मार्गदर्शन न हो):

- समय का दुरुपयोग
- पढ़ाई से ध्यान भटकना
- अनुशासनहीनता
- प्रतियोगिता में अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा

निष्कर्ष (Conclusion)

विद्यालय वातावरण में सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ शिक्षा की रीढ़ समान हैं। ये केवल अतिरिक्त गतिविधियाँ नहीं बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की अनिवार्य शर्त हैं। यदि विद्यालय इनका संतुलित और योजनाबद्ध आयोजन करता है, तो विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक दृष्टि से सफल होते हैं बल्कि जीवन में भी आदर्श नागरिक, जिम्मेदार नेता और संवेदनशील इंसान बनकर उभरते हैं।

संदर्भ (References)

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) – शिक्षा और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, नई दिल्ली।
2. नई शिक्षा नीति 2020 (भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय)।
3. शर्मा, रामनारायण (2019), *शिक्षा मनोविज्ञान*, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
4. चौधरी, एस.के. (2021), *विद्यालय प्रबंधन एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ*, दिल्ली: अजय प्रकाशन।